ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.2, JULY-DEC,2023 /104

संचार सम्प्रेषण,सामाजिक मूल्य एवं ग्राम–नगर सम्पर्क

सुमित यादव
शोध–छात्र : समाजशास्त्र
प्रो0 अनिल कुमार श्रीवास्तव
अध्यक्ष– समाजशास्त्र विभाग, जवाहर लाल नेहरू स्मारक स्नातकोत्तर महा0, बाराबंकी (उ0प्र0)।
https://doi.org/10.61410/had.v18i2.153

सारांश :–आधुनिक भौतिक एवं प्रौद्योगिक युग में व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, राजनीतिक जीवन को गतिशील बनाने तथा उन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विचारधाराओं से जोड़ने में सूचना एवं सम्प्रेषण साधनों का प्रकार्यात्मक महत्व है। ये साधन न केवल व्यक्ति को उसके अधिकारों के प्रति सचेत कराते हैं, बल्कि उसमें नवीन तथ्यों, ज्ञान एवं प्रविधियों का बोध कराते हुए उसके वैचारिक जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। इतना ही नहीं, संचार एवं सूचना स्रोतों के नवीन साधन व्यक्ति की दूरदर्शिता, सामाजिक राजनीतिक जीवन के प्रति जागरूकता तथा सहभागिता में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शब्द संकेत :– प्रौद्योगिक युग, सूचना संप्रेषण, प्रतिबिम्बत, साम्प्रदायिक

प्रस्तावना :–

सूचना एवं संचार सम्प्रेषण साधनों को दो खण्डों में विभक्त किया जा सकता है – प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष। प्रत्यक्ष साधनों में समाचार पत्र, संगोष्ठी, पत्रिकाएं, रेडियो, मोबाइल, इन्टरनेट, टेबलेट, टेलीविजन तथा सिनेमा प्रमुख हैं, जो व्यक्ति को अपने आस–पास की घटनाओं को समझने तथा उन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जीवन से जोड़ने में प्रमुख योग देते हैं। सम्प्रेषण के अप्रत्यक्ष साधनों में साक्षरता, भ्रमण, ग्राम–नगर सम्पर्क, संगठन सहभागिता इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता है, जो व्यक्ति को प्रत्यक्ष सूचना सम्प्रेषण को समझने तया उनका सात्मीकरण करने में सहायता प्रदान करते हैं। प्रायः समाज संरचना में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो प्रत्यक्ष साधनों अथवा भ्रमण, संगठन सहभागिता के माध्यम से सूचनाएं एकत्र करते हैं और इन सूचनाओं को ग्रामवासियों अथवा अपने समूह के सदस्यों में वाद–विवाद या वार्तालाप द्वारा वितरित करते रहते हैं। इस तरह ग्रामीण नेता भी सूचना सम्प्रेषण के प्रमुख साधनों में से एक हैं। रथ तथा एल्थाफ ने लोगों में ज्ञान, मूल्य तथा अभिवृत्तियों के पारस्परिक आदान–प्रदान के लिए सूचना एवं सम्प्रेषण साधनों को आवश्यक माना है (रथ तथा एल्थाफ : 1971 : 160)। वास्तव में यह अकाट्य सत्य है कि सामाजिक जीवन में बहुत सी बातें ऐसी होती हैं, जिन्हें प्रत्यक्ष संचार सम्प्रेषण माध्यमों से सार्वजनिक स्तर पर अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता, ऐसी ही सूचनाओं के लिए द्वैतीयक साधनों के रूप में ग्रामीण अथवा नगरीय समाज संगठन में कुछ ऐसे व्यक्तियों का होना आवश्यक भी है । ग्राम्य जीवन से सम्बन्धित सूचनाओं को विस्तार प्रदान करने में महिलाओं का विशेष योगदान रहता है।

परमात्मा शरण तथा गोयल के अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि संचार साधन व्यक्ति की राजनीतिक सक्रियता और सहभागिता में वृद्धि करते हैं (परमात्मा शरण :1978 : 29, गोयल :1974 : 108 : 111)। स्क्रैम के अनुसार सूचना सम्प्रेषण के साधन समाज के मूल्यात्मक विकास पर आधारित हैं, उसके आर्थिक विकास के स्तर को प्रदर्शित करते हैं, समाज में एकता एवं पृथक्करण का आभास दिलाते हैं तथा उसकी राजनीतिक प्रक्रियाओं को प्रतिबिम्बित करते हैं (स्क्रैम : 1963 : 34)। मेक्लेलैण्ड ने सूचना सम्प्रेषण के साधनों का प्रमुख योगदान व्यक्ति में अर्जनात्मक प्रेरणा का विकास माना है। यह

अर्जनात्मक प्रेरणा सामाजिक प्रगति और विकास की आवश्यक पूर्व दशा है (मैक्लेलैण्ड : 1967)। लर्नर, एलमण्ड एवं कोलमैन के अनुसार सूचना एवं सम्प्रेषण साधनों द्वारा व्यक्ति उन परिस्थितियों और जीवनशैली के विभिन्न स्वरूपों से अवगत होता है जो उसके द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अनुभव की जाने वाली जीवन शैली और परिस्थिति से भिन्न होती है (लर्नर : 1957, एलमण्ड एण्ड कोलमैन : 1960)।

भारतीय ग्रामीण समाज के राजनीतिकरण, ग्रामवासियों में जनतन्त्रीकरण और राजनीतिक सहभागिता के उद्‌बोधन में संचार साधनों का योगदान महत्त्वपूर्ण है। विशेष रूप से भारतवर्ष की वर्तमान राजनैतिक–सामाजिक संरचना में इन साधनों की भूमिका राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को बनाये रखने तथा साम्प्रदायिक सौहार्द्र की स्थिति को समाज में पुनः स्थापित करने के लिए विशेष रूप से प्राथमिक हैं, क्योंकि इन्हीं साधनों के माध्यम से ही देश के प्रत्येक व्यक्ति से सम्पर्क किया जा सकता है। ये साधन जनसमुदाय की जागरूकता, चेतना तथा सामान्य शिक्षा के प्रमुख आधार हैं। इतना ही नहीं, समाज के पिछड़े एवं निम्न वर्ग के लोगों को, जो अभिजात संस्कृति से वंचित थे, संचार–सम्प्रेषण, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विचारधाराओं, उद्देश्यों, आवश्यकताओं, हितों तथा गतिविधियों के प्रति चेतनशील बनाता है। यही कारण है कि बहुत से विचारक इसे राजनीतिक समाजीकरण का एक प्रमुख आधार मानते हैं (रेंशन : 1977 257–258; रथ और एल्थाफ 1971 : 14, श्रीनिवास : 1962 : 74, रासफील्ड : 1967 : 351–362, बील्ब : 1967 : 9–10) इत्यादि विद्वानों के अनुसार संचार सम्प्रेषण साधन आधुनिकता एवं समाज मनोवैज्ञानिक गतिशीलता का सृजन स्रोत तथा जातीय एवं परम्परागत प्रक्रियाओं के संगठन में सुदृढ़ता लाने का आधार हैं। योगेन्द्र सिंह के विचार से भारतीय सन्दर्भ में सम्प्रेषण के साधनों के आधुनिकीकरण ने परम्परा और आधुनिकता के मध्य सांस्कृतिक विसंगति को जन्म दिया है (योगेन्द्र सिंह : 1973 : 13)। यही नहीं, आधुनिक भारत में संचार सम्प्रेषण साधनों को राजनैतिक व्यवहारों तथा सहभागिता का महत्त्वपूर्ण कारक माना गया है (राबर्ट्स : 1974 : 37 : 43, क्रौस एवं ली : 1975, मम्मरी : 1973, 126–127, गोयल : 1974 : 118)। समकालीन वैश्विक परिदृश्य में डिजिटल सूचना तकनीकी नें संचार प्रकिया को तीव्र गति से बदल कर ग्रामीण समाज को नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया है (आहूजा : 2010, अरोरा : 2011, सिंह : 2009)।

मानवीय व्यवहार के निर्धारण में संचार सम्प्रेषण साधनों की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्वीकार की गई है। किन्तु इस तथ्य को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि मानवीय व्यवहार सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों से भी प्रभावित होते हैं। इंकेल्स के अनुसार व्यक्ति, समूह, संगठन, समाज तथा संस्कृति सभी में मूल्य होते हैं, उनकी अभिव्यक्ति होती है, उनका पालन होता है (इंकेल्स : 1965 : 75)। व्यक्ति को मूल्य अनुगमन, मूल्य अभिपुष्टि तथा मूल्य निर्मित करने वाले पशु के रूप में परिभाषित किया जा सकता है (टीड : 1952 : 50)। क्लूखोन के अनुसार मूल्य किसी भी व्यक्ति तथा समूह की वांछनीयता से सम्बन्धित वह प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष पृथकृ अवधारणाएं होती हैं जो उनके विभिन्न वैकल्पिक उद्देश्यों, साधनों तथा कार्य करने के ढंगों में चयन को प्रभावित करते हैं। (क्लूखोन : 1962 : 395, स्मिथ : 1953 : 102)। कोई भी कार्य अथवा मानवीय व्यवहार समाज संगठन में या तो वांछनीय होता है अथवा अवांछनीय। परन्तु मुख्य प्रश्न यह उठता है कि वह कौन सा मापदण्ड है, जिसके आधार पर यह निश्चित किया जाता है कि यह कार्य वांछनीय है अथवा अवांछनीय। समाजवैज्ञानिकों, समाज दार्शनिकों एवं समाज के व्यक्तियों ने मूल्य को ही वांछनीयता के मापन का आधार या मापदण्ड माना है। प्रत्येक समाज अपने सामाजिक ढांचे के अनुसार मूल्यों का निर्माण किए रहता है और व्यक्ति के कार्यों का मूल्यांकन उसी आधार पर करता रहता है। एक प्रकार से मूल्य को व्यक्ति की उन्मुखता का वह पक्ष कहा जा सकता है जो उसके सामाजिक परिस्थितियों में क्रिया विधियों तथा प्राथमिकताओं के चयन के लिए आदर्श मान तथा अन्य आधार प्रदान करता है (लियोनार्ड : 1958 : 35, ली : 1959 :

165; जानसन : 1966 : 64)। स्पष्ट शब्दों में मूल्य समाज द्वारा अनुमोदित और संस्तुत वे इच्छाएं तथा लक्ष्य होते हैं, जिनका सीखने, समाजीकरण तथा प्रतिबन्धता की प्रक्रियाओं द्वारा अन्तरीकरण होता है और जो व्यक्ति की प्राथमिकताओं, मानों तथा महत्वाकांक्षाओं का आधार बनते हैं (मुकर्जी : 1956 : 23)। विभिन्न अध्ययनों द्वारा मूल्यों, व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं, व्यवहार प्रतिमानों तथा राजनैतिक प्रक्रियाओं के मध्य स्पष्ट सम्बन्धों को विवेचित किया गया है (राकेच : 1971; रिम : 1970; फीदर : 1970)।

परम्परागत भारतीय समाज में धर्म, जाति संरचना एवं सांस्कृतिक प्रभुता का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है और इन्हीं ने एक ओर जहाँ अनेक प्रकार के मूल्यों का प्रतिपादन तथा उनमें स्थायित्व प्रदान किया वहीं दूसरी ओर विभिन्न प्रकार के रूढ़िवादी, जैसे – जातिवादी, भाग्यवादी तथा अन्धविश्वास जैसी अवधारणाओं को भी उत्पन्न किया है। ये अवधारणाएं यद्यपि सामाजिक नियन्त्रण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, फिर भी आधुनिक वैज्ञानिक युग में सामाजिक विकास तथा सामाजिक परिवर्तन में काफी अवरोधक सिद्ध हुई हैं। व्यावसायिक, आर्थिक, शैक्षणिक गतिशीलता का मार्ग भी इन्ही के चलते प्रशस्त नहीं हो सका है।

समकालीन परिवेश में संचार एवं यातायात व्यवस्था में भारतीय उपमहाद्वीप में तीव्र वेग से परिवर्तन हुआ है। तकनीकी विकास एवं नवीन प्रौद्योगिकी ने सम्पूर्ण विश्व को एक वैश्विक गांव के रूप में बदल दिया है। वस्तुतः सूचना प्रौद्योगिकी के परिवेश में जनसंचार एक विराट एवं व्यापक अवधारणा है। इसमें हम उन सभी तरह के विचारों और व्यवहार के ढंगों के सम्प्रेषण को सम्मिलित करते हैं जो स्थानीय स्तर के नेताओं, विभिन्न भाषणों उपदेशों और नाटकों से लेकर संचार के विकसित साधनों के द्वारा विभिन्न समुदायों तक पहुँचाये जाते हैं। प्रायः सूचना प्रौद्योगिकी के मुख्य साधनों में डाक व्यवस्था, प्रेस, समाचार–पत्र, पत्रिका, दूरसंचार (इन्टरनेट, मोबाईल, टेलीफोन, वाई–फाई इत्यादि), रेडियो तथा टेलीविजन, विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार विभाग, भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली, कम्प्यूटर प्रणाली (ई–मेल, फेसबुक, वाट्सएप, सर्च–इंजन, गूगल, चैटिंग, सोशल नेटवर्किंग साइट, विभिन्न एप्स, ट्विटर, ओ.टी.टी. , चैटजीपीटी, विडियो कालिंग इत्यादि–इत्यादि) के माध्यम से सूचनाओं का आदान–प्रदान किया जाता है।

संचार–सम्प्रेषण व्यवस्था ने भारतीय समाज की ग्रामीण क्षेत्र में आवासित सभी जातियों के परम्परागत सम्बन्धों, विचारों, मनोवृत्तियों और व्यवहार के तरीकों को व्यापक रूप में प्रभावित किया है। प्रमुख रूप से सामाजिक व्यवस्था के क्षेत्र में व्यक्ति की प्रस्थिति के निर्धारण से मनोवृत्तियों, कुशलताओं, सांस्कृतिक, आर्थिक प्रणालियों में परिवर्तन के साथ–साथ धार्मिक गतिविधियों पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। अन्तर्क्रियाओं, सम्बन्धों के व्यापारीकरण, आधुनिकीकरण एवं वैश्वीकरण की प्रक्रिया को ग्रामीण क्षेत्र में प्रसारित करने में भी सूचना सम्प्रेषण का महत्त्वपूर्ण योगदान है। नवाचारों में वृद्धि, नियोजित परिवर्तन, अर्थव्यवस्था का कुशल संचालन व्यावसायिक मनोरंजन एवं राजनैतिक आचरण में परिवर्तन का भी कार्य सम्प्रेषण प्रणाली द्वारा सम्भव हो सका है।

इन प्रभावों में सूचना सम्प्रेषण की नवीन कम्प्यूटरीकृत प्रणाली ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक समस्याओं जैसे अपराध, साइबर अपराध, डीपफेक, वैयक्तिक विघटन, पारिवारिक घनिष्टता में कमी, अश्लील कार्यक्रम, हैकिंग, चैटिंग, क्रश इत्यादि को भी जन्म दिया है। इन परिवर्तनों की पृष्ठभूमि का अगर हम आकलन एवं विश्लेषण करते हैं तो स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में संचार सम्प्रेषण माध्यमों के प्रसार में ग्राम–नगर सम्पर्क, की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वर्तमान में संचार एवं सूचना सम्प्रेषण के क्षेत्र में ए. आई. का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। साथ ही साथ इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों के प्रति भी समाज एवं सरकार की सजगता परिलक्षित हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Ahuja, B.K. : Mass Media Communication, Saurabh Publishing House Delhi – 2010.
- अरोरा, हरीश : भारत में जनसंचार, नई दिल्ली, 2011.
- Kumar, J. Kewal : Mass Comunication in India ,Jai Co., New Delhi 2011.
- सिंह, श्रीकान्त : सम्प्रेषण प्रतिरूप एवं सिद्वान्त, भारती पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स अयोध्या, 2008
- Narola, Uma : Communication , Atlantic Publication, New Delhi 1998.
- Feather N.T., "Educational Choice and Student Attitudes in Relation to Terminal and Industrial Values", Australian Journal of Psychology, 22, 1970.
- Goel, M.L., Political Participation in Developing Nation, India Publishing House, Bombay, 1974.
- Gore, M.S., Urbanization and Family Change in India, Popular Prakashan, Bombay, 1968.
- Goyal S. K., "Economic Aspirations – A Sociological Study of White Collar Workers," Inter – discipline, Vol.5, No.3, 1968.
- Gusfield, J.R., Tradition and Modernity : Misplaced Polarities in the study of Social Change , American Journal of Sociology, Vol. 72, No. 4, Jan 1967.
- Inkeles, A., What is Sociology? Prentice Hall of India (P) Ltd. New Delhi, 1965.
- Issaacs, Harold, India's Ex-Untouchability, John Day and Co., New York, 1965.
- Lerner, D., "Communication System and Social System, "Behavioural Science, Vol. 2, No. 4, Oct. 1957.
- Lerner, D., The Passing of Traditional Society, 1958.
- Meclelland, C. Davi, " The Achieving Society, The Free Press of Glenceo, New York, 1967.
- Mishra, S.N., Pattern of Emerging Leadership in Rural India, Associated Book Agency, Patna ,1977.
- Pye, L.W., Communication and Political Development (ed.) Radhakrishna Prakashan, New Delhi, 1972.
- Seal S. C., The textbook of preventive and Social Medicine (ed.) Allied Agency, Calcutta, 1971.
- Singh, Y., Modernisation of Tradition in India, Thomson Press, Pub. Ltd, New Delhi, 1973.
- Smith, T.L., The Sociology of Rural Life, Harper and Brother, New York, 1953.
- Srinivas, M.N., Social change in Modern India, Asia Publishing House, Mumbai, 1972.